International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 801-802

मालवांचल की लोक कथाओं में पर्यावरण चेतना

रेखा कुमावत
Guest Feculty (Hindi), Govt. College, Sitamau, Mandsaur, Madhya Pradesh, India

प्रस्तावना

मालवा में लोक कथाओं का विपुल भण्डार है। नर्मदा एवं चम्बल की उपत्यकाओ में बसी जनता के मधुर कंठो में लोक कथाओं का अथाह सागर भरा हुआ है। इन कथाओं में लोक जीवन का अटूट विश्वास अभिव्यक्त हुआ है। लोक मानस की अंतर की धार्मिक भावनाएँ, रूढियॉ, अंधविश्वास, रहन–सहन प्रकृति चित्रण लोक मान्यताओं के सजीव चित्र भरे पड़े है।

मालवा के निवासीयों का जीवन सरल एवं साधारण है यहॉ कृषि ही जीवन का मुख्य आधार है। अतः सामाजिक जीवन का लोककथाओं पर अधिक पडा है। मालवी में सभी प्रकार की कथाओं का वर्णन मिलता है, एक और ऐतिहासिक कथॉए तो दूसरी और धर्म और धार्मिक कथाएँ तथा तीसरी और व्रत कथाएँ चौथी तरफ पशु–पक्षियों की कथाएँ इस प्रकार सभी दृष्टि से सभी विषयों से परिपूर्ण कथाओं का उल्लेख मिलता है। मध्यप्रदेश में आदिवासियों जनजातियों का बाहुल्य होने के कारण इनकी नैतिक मान्यताओ, और अभिप्रायों में मध्यकालीन प्रथाओं की झलक मिलती है।

मालवा में बसी जन जातियों की अपनी – अपनी सभ्यता एवं संस्कृति है। इसी के अनुरूप जातिगत लोक कथाएँ भी बहुतायात से उपलब्ध हैं, जिसमें उनके जातिगत जीवन के संस्कार,लोक विश्वास धार्मिक भावनाएँ,रूढियॉ, खानपान का चित्रण मिलता है। जन जातीय जीवन का यत्र – तत्र उल्लेख भी अनेक कथाओ में व्यक्त हुआ है। ब्राह्मणों की लोक–कथाओ में उनके पूजा पाठ, यज्ञ–हवन आदि का ज्योतिष विषयक मान्यताएँ उपलब्ध होती है।

मालवा में गेय कथाओ का प्रचलन बहुत अधिक है इन कथाओ में संगीत तत्व की प्रधानता रहती है। गॉव नगर के नर–नारियों के मधुर कंठ से इन भाव प्रधान गीत कथाओं को कही से सिखना नही पडता है ये तो कई वर्षो से मानव क कंठो पर विराजित है। वे गीत कथाएँ त्योंहारो, उत्सवो, विवाह समारोहो, धार्मिक पर्वो पर सामुहिक रूप से गाई जाती है। मालवा प्रारम्भ से कृषि प्रधान एवं धर्म प्रधान रहा है, हीड, तेज्या धोल्या,बासक नाग, नागजी, चंदनाकुंवर, राजानल एवं ग्यारसमाता आदि लोक संगीत के बड़े–बड़े लोक काव्य, जिन्हे मालवे की जनता विभिन्न ऋतुओं एवं धार्मिक पर्वो एवं सार्वजनिक चौराहो, खेतों तथा खलिहानो पर गाती रहती है। इन कथाओ में श्रृंगार, करूणा,वेदना, विछोह, प्रेम व्यंग्य विनोद, चतुराई आदि मानवीय भावनाएँ अभिव्यक्त हुई है।

मालवी लोक कथाओ में पर्यावरण चेतना का पुट दिखाई देता है क्योंकि मनुष्य जीवन में प्रकृति का प्रमुख स्थान है। प्रकृति के बिना मानव जीवन अधूरा है। शास्त्रों, पुराणो, लोक–जीवन में हर जगह प्रकृति की ही आराधना की गई है।

डॉ. श्याम परमार ने मालवी लोक कथाओं में सभी प्रकार की लोककथाओं के प्राप्त होने का उल्लेख करते हुए लिखा है। ऐतिहासिक और अर्द्वऐतिहासिक कथाएँ जहॉ एक और लुप्त इतिहास की कड़ियों को जोड़ती है, वहॉ दूसरी और व्रत कथाएँ,पशु पक्षी संबंधी कथाएँ चतुराई विषयक कथाएँ, क्रम संबंधी कथाएँ और चमत्कार प्रधान कथा व्रत सम्पूर्ण पठार पर कुतूहल की सृष्टि करते है।

विभिन्न विषय के कथा साहित्य का अध्ययन करने के बाद यह ध्यान में आता है कि मालवी लोक कथाएँ ग्रामीण जन जीवन से जुड़े हुए उन सभी विषयो को कथाओं में लिया गया है, जिन्हे वे अपने आचार –विचार, रहन सहन में अपनाते है। इस प्रकार लोक कथाओं को निम्नलिखित भागो में विभाजित किया जा सकता है।

1. व्रत पर्व, त्योहार संबंधी
2. पशुपक्षी एवं पेड़ पौधे संबंधी
3. कृषि संबंधी
4. धार्मिक कथॉए
5. सामाजिक कथाएँ
6. बाल कथाएँ

व्रत त्योहार संबंधी लोक कथाएँ

मालवांचल व्रत,पर्व और त्योहारों से भरा हुआ है यहॉ पर ''आठ वार और नौ त्यौहार''वाली कहावत चरितार्थ होती है इन सभी व्रतों और त्योहारों पर कथाएँ सुनना और सुनाना प्राचीन समय से परम्परा चली आ रही है। गॉव की चौपाल तथा घर के आंगन कथा सुनाने का रिवाज आज भी चला आ रहा है। स्त्रियों की व्रत अनुष्ठानों एवं पर्व त्यौहारो से संबंधित कथाएँ नारी जीवन के उल्लेखित पक्ष को व्यक्त करने में सफल हुई है। वटसावित्री, शीतलाष्टमी, दशामाता, नागपंचमी, हरतालिकातीज, ऋषि पंचमी,बछबारस, गणगौर, एकादशी,आँवला नवमी आदि के व्रत और कथाएँ प्रचलित है, जिनमें पर्यावरण के प्रति प्रेम व सुरक्षा की भावना दिखाई देती है

मालवा में बछ बारस, गाज बीज, दशामाता, करवाचौथ, ऋषि पंचमी आदि व्रत है जिनमें कथा सुनने के बाद ही व्रत खोला जाता है। कथा के पहले अन्न ग्रहण नही किया जाता है। कुछ कथाओं को अध्ययन में लिया गया है जो पर्यावरण की दृष्टि से भी महत्व रखती है।

धार्मिक कथाओं में प्रमुख रूप से महादेवजी के ब्यावलो, नागलीला, शनिमहाराज की कथा, होनी होके रही, सीताजी खोज आदि लोक कथाए मानी जाती है। मालवी में प्राप्त नाथजी महाराज कायरा का अवदान प्रस्तुत है जिन्होने जीवित अवस्था में समाधी लगाई बाद में सदेह उज्जैन में दर्शन दिये। आज भी लोक उस समाधी को पुजत है। लोक मान्यता है कि कृषि में इल्ली (किड़ा) लगने पर यदि नाथजी समाधि विधिवत पूजन कर वहॉ चढाया जल खेत के तीन कोनो पर छिटक कर एक भाग खुला रखा जाय तो खुले वाले भाग से इल्ली का कीड़ा बाहर निकल जाएगा।

सामाजिक कथाएँ

सामाजिक लोक कथाओ के अन्तर्गत राजा–रानी, न्याय संबंधी

नारी–जीवन संबंधी नीति एवं उपदेश संबंधी चतुराई संबंधी, संप्रदाय संबंधी विभिन्न लोक कथाएॅ आती है। मालवी लोक कथाओं में सामाजिक कथाओ के भी अपार भण्डार है। सत्यवान राजा, सोतेला राजकुमार पटेल को न्याय, फूला दे, कुंवरी, केसरयों मृग, तीन कोडी को महल आदि। संप्रदाय संबंधी कथाओं की मान्यता मालव जनपद में बहुत है। नाथ संप्रदाय वैष्णव संप्रदाय आदि संप्रदाय की छाप मालवी लोक कथाओं पर पडी हे। नाथ संप्रदाय की प्राप्त लोक कथा, गौरखनाथ, मछन्दरनाथ विशेष रूप से उल्लेखित है।

बाल कथाएॅ

मालवी लोक – कथाओं में बालमन की सुलभ चेष्टा को कथाओं के माध्यम से शांत करने का प्रयास किया गया है। इन कथाओ में पशु पक्षियों की कथाएॅ विनादे की कथाएॅ भूत की कथाएॅ आदि प्रमुख विषय है। वे कथाएॅ गेयात्मक तथा पद्यात्मक दोनो प्रकार की है। प्रमुख लोक कथाओ में चिड़ा और चिड़ी, ऊंदरा की केणी, चट्या मट्या की केणी, सियाल और ऊंट, मगर और बंदर, तोता– मेना, डोकरी ने न्हार, खेर को कॉटों, चतुर लोमडी, काचरा की केणी आदि में पर्यावरण के प्रति प्रेम दिखाई देता है।

मालवा के पठार पर विभिन्न जातियों का सांस्कृतिक समन्वय हुआ है। राजस्थान के नायक और नायिकाओं की कथाएॅ विकृत होकर प्रचलित हुई है। ''माच'' में प्रस्तुत कथानको के पृष्ठ में ये लोक कथाएॅ विद्यमान है। इन लोक कथाओं में हमें कही न कही पर्यावरण के प्रति जागरूकता व समर्पण के भाव परिलक्षित होते है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मालवा का लोक नाट्य माच और अन्य विधाएॅ. डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा, अंकुर मंच उज्जैन
2. मालवी लोक कथाएॅ. डॉ. प्रहलादचन्द जोशी,सार्थक प्रकाशन
3. मालवी एक भाषा शास्त्रीय अध्ययन. डॉ. चिन्तामणि उपाध्याय, मंगल प्रकाशन
4. मालवी लोक कथाएॅ. डॉ. श्याम परमार, आत्माराम एण्ड संस
5. मालवी साहित्य का इतिहास. डॉ. श्यामसुन्दर निगम, साहित्य अकादमी भोपाल